“किराना घराने के प्रचार–प्रसार में कतिपय प्रमुख महिला–कलाकारों का सांगीतिक क्षेत्र में योगदान”

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)

आगरा की पी–एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध–निर्देशकः सह–निर्देशकः शोधार्थीः

डॉ. नीतू गुप्ता प्रो. रवि कुमार भटनागर प्रतिमा नरायन

अति. प्रो.(सितार) संगीत–गायन

संगीत–गायन

विभागाध्यक्षः कला–संकाय प्रमुखः

प्रो० (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी प्रो० रागिनी रॉय

संगीत–विभाग

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा

किराना घराने के प्रचार–प्रसार में कतिपय प्रमुख महिला कलाकारों का सांगीतिक क्षेत्र में योगदान

भूमिका

कला को प्रतिष्ठित करने में कलाकार की भूमिका अहम् होती है। कला कलाकार की प्रतिभा व साधना के निरन्तर योग से संस्कृति को सुविकसित भी करती है। समस्त ललित कलाओं के अन्तर्गत संगीत–कला सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है, क्योंकि यह भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। आज से ही नहीं अपितु प्राचीन काल से ही संगीत कला को जीवन्त रखने में अनेक कलाकारों एवं शास्त्रकारों की भूमिका अहम् रही है, जिसमें मात्र पुरुष कलाकार ही नहीं बल्कि महिला कलाकारों का विशिष्ट योगदान रहा है। ऐतिहासिक पक्ष पर जब दृष्टिपात किया जाता है, तो प्राप्त होता है कि महिलाओं का प्रत्येक क्षेत्र में योगदान रहा है। हमारा इतिहास भी महान् नारियों के त्याग, बलिदान, आदर्श से परिपूर्ण है।

अतः 'घराना' जो कि भारतीय संगीत की अमूल्य निधि और निजी संकल्पना के आधार पर पहचानी जाती है घराना गायन शैली की मौलिकता एवं विशिष्टता लिये हुए विभिन्न घराने प्रचार में आये, जिनमें ग्वालियर घराना, जयपुर घराना, किराना घराना, आगरा घराना आदि के नाम लिए जाते हैं। स्वर और लय रूपी एक ही मूल होने पर भी प्रत्येक घराने की गायकी एक दूसरे से भिन्न है किराना घराने के सन्दर्भ में जब चर्चा करते हैं तो प्राप्त होता है कि किराना घराने का ख़्याल–गायकी के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान रहा है। इस घराने का प्रारम्भ सुप्रसिद्ध बीनकार बन्दे अली खाँ से माना जाता है परन्तु घराने के रूप में स्व, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और अब्दुल वहीद खाँ जी द्वारा

किराना घराना प्रतिष्ठित हुआ। विषय–वस्तु को दृष्टिगत करते हुए जब किराना घराने के प्रचार–प्रसार में महिलाओं के योगदान पर दृष्टिपात किया गया तो प्राप्त होता है कि किराना घराने की महिला कलाकारों ने संगीत के क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान दिया और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति भी प्राप्त की। अतः संगीत–कला को जीवन्त रखने में महिला कलाकारों ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया जिनमें सुश्री हीराबाई बरौडकर जी, पद्मश्री गंगूबाई हंगल जी आदि ने अपनी गायन की व्यक्तिगत विशेषता, गायन शैली, प्रदर्शन का ढंग अपनी सूझबूझ व स्वर–साधना, द्वारा किराना घराने की गायकी को समृद्ध किया व किराना घराने के प्रचार–प्रसार आदि में अपना अमूल्य योगदान दिया। इन्हीं तथ्यों पर जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्री ने किराना घराने के प्रचार–प्रसार में कतिपय प्रमुख महिला कलाकारों का सांगीतिक क्षेत्र में योगदान विषय को शोध–प्रबन्ध हेतु चयनित किया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः

1. 'स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के सन्दर्भ में महिला कलाकारों का योगदान' विषय पर कु. राखी वार्ष्णेय द्वारा लघु शोध–प्रबन्ध पूर्ण किया गया।

2. 'तबला वादन के क्षेत्र में महिला कलाकारों की भूमिका' विषय पर रेशू अग्रवाल द्वारा लघु शोध–प्रबन्ध पूर्ण किया गया।

3. 'सितार वादन के क्षेत्र में नारी की भूमिका (आगरा के सन्दर्भ में)' विषय पर एम. निहारिका द्वारा लघु शोध–प्रबन्ध पूर्ण किया गया।

अध्ययन की आवश्यकता:

प्रस्तुत विषय पर शोधकर्त्री को अध्ययन की आवश्यकता इसलिए हुई कि संगीत के क्षेत्र में महिलाओं का बहुमुखी योगदान रहा है। प्रत्येक काल में चाहे वह वैदिक काल हो, मध्य काल हो या आधुनिक काल, महिला–कलाकारों द्वारा पारिवारिक एवं व्यवसायिक, महिलाओं ने विशेषकर अपने पारम्परिक दायित्त्वों का निर्वहन करते हुए संगीत के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिला कलाकारों ने संगीत क्षेत्र में विशेष संघर्ष संगीत के प्रति निष्ठा, तपस्या, साधना और विषय परिस्थितियाँ होते हुए भी संगीत की उस चरम अवसर को प्राप्त किया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् शोधकर्त्री को यह ज्ञात हुआ कि महिला–कलाकारों पर शोध कार्य तो अवश्य हुआ है, किन्तु किराना घराने के सन्दर्भ में महिला–कलाकारों के योगदान का विषय अभी तक संज्ञान में नहीं है, अतः शोधकर्त्री द्वारा उत्सुकतावश तथा जिज्ञासा हेतु प्रस्तुत विषय को शोध–प्रबन्ध हेतु चयनित किया गया।

विषय

किराना घराने के प्रचार प्रसार में कतिपय प्रमुख महिला कलाकारों का सांगीतिक क्षेत्र में योगदान।

परिसीमांकन:

समय एवं कार्य की सीमा को देखते हुए जिसमें शोध–प्रबन्ध उचित समय में पूर्ण हो व विषय–वस्तु के साथ न्याय हो सके इस लिए प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को किराना घराने

की 1901 से अब तक की कतिपय प्रमुख महिला–कलाकारों का संगीत के क्षेत्र में योगदान विषय तक ही सीमित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्यः

1. प्रस्तुत शोध कार्य में किराना घराने की कतिपय चयनित महिला कलाकारों का संगीत के क्षेत्र में दिये गये योगदान पर अध्ययन किया जायेगा।

2. किराना घराने की कतिपय महिला कलाकारों द्वारा गायी गई बंदिशों का संकल्पन एवं उनका विश्लेषण किया जायेगा।

अध्ययन के स्रोतः

प्रस्तावित शोध विभिन्न पुस्तकालय, सी.डी, डी.वी.डी., इन्टरनेट, पत्र–पत्रिकायें लेख–लेखन, सामग्री, आकाशवाणी–दूरदर्शन, विभिन्न कलाकारों से प्राप्त साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि के माध्यम द्वारा पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन की रूपरेखाः

प्रथम अध्याय – सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण।

द्वितीय अध्याय – किराना घराना – परिचयात्मक अध्ययन।

तृतीय अध्याय – किराना घराने की कतिपय चार प्रमुख महिला कलाकारों का संगीत के क्षेत्र में योगदान।

चतुर्थ अध्याय – किराना घराने की कतिपय चार महिला–कलाकारों का संगीत के क्षेत्र में योगदान।

पंचम अध्याय – किराना घराने की कतिपय महिला–कलाकारों द्वारा गायी गयी बंदिशों का संकलन एवं विश्लेषण।

षष्ठम अध्याय – **निष्कर्ष।**

संदर्भ ग्रन्थ सूची

,